मधुबन ओम् शान्ति अंक 386 सितम्बर 2024

पत्र-पुष्प

"इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति में रह अखण्ड दानी बनो"

(याद पत्र – 22-08-2024)

परमप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न, इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति में रहने वाले, अखण्ड दानी, सर्व कामनाओं रहित निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - अगस्त मास में सभी ने तपस्वी मूर्त बन योग तपस्या के साथ-साथ बेहद की खूब सेवायें की। बहुत उमंग-उत्साह भरे सेवा समाचार सब तरफ से मिल रहे हैं। प्यारे बापदादा की हम सभी बच्चों प्रति यही शुभ आश है कि मेरा हरेक बच्चा ज्ञान, गुण और सर्व शक्तियों से ऐसा सम्पन्न, तृप्त बनें जो इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति में रह अनेक आत्माओं की इच्छाओं को पूर्ण कर सके। बाबा कहते बच्चे, अभी आप ज्ञानी तू आत्मा बच्चों को कोई भी हद की इच्छा नहीं रखनी है क्योंकि इच्छायें अच्छा कर्म समाप्त कर देती हैं। ऐसे कभी नहीं बोलो कि मैंने किया है तो मुझे इसका रिटर्न मिलना चाहिए। मेरा कुछ इन्साफ (न्याय) होना चाहिए। ऐसे इन्साफ मांगने वाले नहीं बनो क्योंकि मांगने वाला कभी स्वयं को तृप्त आत्मा अनुभव नहीं कर सकता।

जैसे ब्रह्मा बाप ने स्वयं का समय भी सेवा में दिया। स्वयं निर्मान बन बच्चों को मान दिया। अपना त्याग कर दूसरे का नाम किया। मालिकपन का मान भी दे दिया - शान भी दे दिया, नाम भी दे दिया। ऐसे फालो फादर करो तब इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति बनेगी। नहीं तो अनेक इच्छायें आत्मा को परेशान करती हैं। कोई एक विनाशी इच्छा पूर्ण होगी तो अनेक इच्छायें जन्म ले लेंगी। फिर इच्छाओं के चक्र में मकड़ी की जाल मुआफिक फँसते जायेंगे। छूटना चाहते भी छूट नहीं सकेंगे। आपको तो इस जाल में फँसे हुए अपने भाईयों को विनाशी इच्छाओं से निकालना है। आप ईश्वरीय बच्चे, दाता के बच्चे हो, सर्व प्राप्तियां आपका जन्म सिद्ध अधिकार हैं, सदा इसी शान में रहो।

अभी बापदादा समय के पहले सब बच्चों को सम्पन्न स्वरूप में, तृप्त स्वरूप में देखना चाहते हैं क्योंकि अभी के यह संस्कार ही बहुतकाल की प्राप्ति के अधिकारी बनायेंगे इसलिए कभी पुरुषार्थ के प्रालब्ध की इच्छा नहीं रखो क्योंकि प्रालब्ध भोगने की इच्छा जमा होने में कमी कर देती है। तो प्रालब्ध की इच्छा को खत्म कर सिर्फ अच्छा पुरुषार्थ करो, इच्छा के बजाए अच्छा शब्द याद रखो।

बोलो, सभी ने ऐसी ऊंची स्थिति बनाई है ना! संगमयुग पर जो हम बच्चों को बाप द्वारा अविनाशी प्राप्तियां हो रही हैं, जितना उनके स्मृति स्वरूप बनते जायेंगे उतना स्वयं को सदा भरपूर अनुभव करेंगे।

बाकी वर्तमान समय तो चारों ओर सेवाओं की अच्छी धूम है। शान्तिवन में भी सितम्बर मास में 4-5 बड़ी कान्फ्रेन्सेज़ हैं। बाबा के अनेक नये पुराने बच्चे यहाँ से खूब भरपूर होकर जाते हैं।

अच्छा - सभी को याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

ईच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति का अनुभव करो और कराओ

1) "इच्छा मात्रम् अविद्या" - यह स्थिति देवताओं की नहीं आप ब्राह्मणों की है क्योंकि देवताई जीवन में तो इच्छा वा न इच्छा का सवाल ही नहीं है। यहाँ इसकी नॉलेज है इसलिए ''इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति में रहना'' इसी को ही ब्राह्मण-जीवन कहा जाता है। इस ब्राह्मण जीवन में सर्व प्राप्ति सम्पन्न हो। सर्व की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले कामधेनु हो।

2) जो भरपूर होता है वह सदा ही इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति में रहता है और मन से मुस्कराता है, वो सर्व प्राप्ति सम्पन्न होता है इसलिए उसके मन का लगाव वा झुकाव किसी व्यक्ति या वस्तु की तरफ नहीं होता, इसको ही ''मनमनाभव'' कहते हैं। उन्हें मन को बाप की तरफ लगाने में मेहनत नहीं होती लेकिन सहज ही मन बाप की मुहब्बत के संसार में रहता है।

3) आप ''दाता'' के बच्चे मास्टर दाता हो। दाता अर्थात् सम्पन्न। ऐसी सम्पन्न आत्मा सदा इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति में रहती है, उन्हें न सूक्ष्म लेने की इच्छा, न स्थूल लेने की इच्छा। कोई अप्राप्ति अनुभव नहीं होती जिसे लेने की इच्छा हो। वे सर्व प्राप्ति सम्पन्न होते हैं। प्राप्ति सम्पन्न ही औरों को प्राप्ति करा सकते हैं।

4) जो सर्व प्राप्तियों से तृप्त रहते हैं, उनकी स्थिति इच्छा मात्रम् अविद्या की स्वत: बन जाती है। उनमें कामना के बजाए सामना करने की शक्ति होती है। वे किसी की भी इच्छाओं की पूर्ति कर सकते हैं। अगर स्वयं में ही कोई इच्छा रही होगी तो वह दूसरे की इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकेंगे।

5) 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्टेज वा स्थिति तब रहती है जब स्वयं युक्ति-युक्त, सम्पन्न, नॉलेजफुल और सदा सक्सेसफुल अर्थात् सफलतामूर्त होते हैं। जो स्वयं सफलतामूर्त नहीं होगा तो वह अनेक आत्माओं के संकल्प को भी सफल नहीं कर सकता। जो सम्पन्न नहीं उसकी इच्छायें जरूर होंगी क्योंकि सम्पन्न होने के बाद ही 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्टेज आती है।

6) 'इच्छा मात्रम् अविद्या' अर्थात् सम्पूर्ण शक्तिशाली बीजरूप स्थिति। जब मास्टर बीजरूप बनते हो तब पत्तों को प्राप्ति करा सकते हो। अनेक भक्त आत्मा रूपी पत्ते जो सूख गये हैं, मुरझा गये हैं, उनको फिर से अपने बीजरूप स्थिति द्वारा शक्तियों का दान वा सर्व प्राप्तियां कराने के लिए आपकी 'इच्छा मात्रम् अविद्या' स्थिति चाहिए।

7) कोई भी इच्छा, अच्छा कर्म समाप्त कर देती है इसलिए इच्छा मात्रम् अविद्या बनो। ऐसा ज्ञानी नहीं बनना कि यह मैंने किया तो मुझे मिलना ही चाहिए, मेरा कुछ इन्साफ (न्याय) होना चाहिए। कभी भी इन्साफ माँगने वाले नहीं बनना। किसी भी प्रकार के माँगने वाला स्वयं को तृप्त आत्मा अनुभव नहीं करेगा।

8) जो इच्छा मात्रम् अविद्या स्थिति में रहता है वही अखण्ड दानी बन सकता है। जैसे बाप ने स्वयं का समय भी सेवा में दिया। स्वयं निर्मान बन बच्चों को मान दिया। अपना त्याग कर दूसरे का नाम किया। बच्चों को मालिक रखा और स्वयं को सेवाधारी रखा। तो मालिकपन का मान भी दे दिया - शान भी दे दिया, नाम भी दे दिया। ऐसे फालो फादर करो तब इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति बनेगी।

9) इच्छा माना परेशानी। इच्छा कभी अच्छा बना नहीं सकती क्योंकि विनाशी इच्छा पूर्ण होने के साथ-साथ वह और अनेक इच्छाओं को जन्म देती है इसलिए इच्छाओं के चक्र में मकड़ी की जाल मुआफिक फँस जाते हैं, छूटने चाहते भी छूट नहीं सकते, तो इस जाल में फँसे हुए अपने भाईयों को विनाशी इच्छा मात्रम् अविद्या बनाओ।

10) हम सभी ईश्वरीय बच्चे, दाता के बच्चे हैं, सर्व प्राप्तियां जन्म सिद्ध अधिकार हैं, इस शान में रहो। मास्टर विधाता, मास्टर वरदाता, मास्टर सागर बन ऐसी शक्तिशाली स्थिति का अनुभव करो। सदा अल्पकाल की इच्छा मात्रम् अविद्या की शक्तिशाली स्थिति में रहने के अभ्यासी बनो।

11) आपके छोटे-छोटे भाई बहिनें यही कामना लेकर आप बड़ों की तरफ देख रहे हैं, पुकार रहे हैं कि हमारी मनोकामनायें पूर्ण करो। हमारी सुख शान्ति की इच्छायें पूर्ण करो। तो आप क्या करेंगे? अपनी इच्छायें पूर्ण करेंगे वा उन्हों की पूर्ण करेंगे? जब आपके दिल से यही श्रेष्ठ नारा निकले कि ''इच्छा मात्रम् अविद्या'' तब सबकी इच्छायें पूरी हों।

12) आप बच्चे विश्व के लिए आधारमूर्त हो, विश्व के आगे जहान के नूर हो, जहान के कुल दीपक हो यह जो आपकी श्रेष्ठ महिमा है, ऐसी श्रेष्ठ महिमा के अधिकारी आत्मायें अब विश्व के आगे अपने सम्पन्न रूप में प्रत्यक्ष हो दिखाओ। अगर अभी तक अपने हद की आशायें पूर्ण करने की इच्छा है, थोड़ा-सा नाम

चाहिए, मान चाहिए, रिगार्ड चाहिए, स्नेह चाहिए, शक्ति चाहिए। ऐसी स्व के प्रति इच्छायें हैं तो इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति द्वारा विश्व की इच्छायें कब पूरी करेंगे!

13) बेहद के विधाता के लिए यह हद की आशायें वा इच्छायें स्वयं ही परछाई के समान पीछे-पीछे चलती हैं। यह 5 तत्व भी आप विधाता के आगे दासी बन जाते हैं, आपके आगे यह हद की इच्छायें ऐसी हैं जैसे सूर्य के आगे दीपक। लेकिन चाहिए की तृप्ति का आधार है - जो चाहिए वह ज्यादा से ज्यादा देते जाओ। मान दो, रिगार्ड दो, रिगार्ड लो नहीं। नाम चाहिए तो बाप के नाम का दान दो तो आपका नाम स्वत: हो जायेगा। मांगने से मिले यह रास्ता ही रांग है तो मंजिल कहाँ से मिलेगी इसलिए मास्टर विधाता बनो तो सब इच्छायें पूरी हो जायेंगी।

14) वर्तमान विश्व में चारों ओर इच्छायें बढ़ रही हैं, इच्छाओं के वश आत्मायें परेशान हैं इसलिए आप बच्चे अपने बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा उन आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति फैलाओ। आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती। जब आप बच्चों की स्थिति इच्छा मात्रम् अविद्या की होगी तब जयजयकार और हाहाकार होगी।

15) जैसे बापदादा कोई भी कर्म के फल की इच्छा नहीं रखते हैं। हर वचन और कर्म में सदैव पिता की स्मृति होने कारण फल की इच्छा का संकल्प मात्र भी नहीं रहता, ऐसे फालो फादर करो। कच्चे फल की इच्छा नहीं रखो। फल की इच्छा सूक्ष्म में भी रहती है तो जैसे किया और फल खाया, फिर फलस्वरुप कैसे दिखाई दें, इसलिए फल की इच्छा को छोड़ इच्छा मात्रम् अविद्या बनो।

16) जैसे अपार दु:खों की लिस्ट है, वैसे फल की इच्छाएं वा जो उसका रेसपान्स लेने का सूक्ष्म संकल्प रहता है वह भी भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। निष्काम वृत्ति नहीं रहती। पुरुषार्थ के प्रारब्ध की नॉलेज होते हुए भी उसमें अटैचमेंट रहती है। कोई महिमा करते हैं और उसकी तरफ आपका विशेष ध्यान जाता है तो यह भी सूक्ष्म फल को स्वीकार करना है।

17) एक श्रेष्ठ कर्म करने का सौ गुणा सम्पन्न फल आपके सामने आयेगा लेकिन आप अल्पकाल के इच्छा मात्रम् अविद्या बनो। इच्छा - अच्छा कर्म समाप्त कर देती है, इच्छा स्वच्छता को खत्म कर देती है और स्वच्छता के बजाय सोचता बना देती है, इसलिए इस विद्या की अविद्या हो।

18) आपने कोई सेवा अभी-अभी की और अभी-अभी उसका फल ले लिया तो जमा कुछ नहीं हुआ, कमाया और खाया। उसमें फिर विलपावर नहीं रहती। वह अन्दर से कमजोर रहते हैं, शक्तिशाली नहीं खाली-खाली रह जाते हैं। जब यह बात खत्म हो जायेगी तब निराकारी, निरहंकारी और निर्विकारी स्थिति स्वत: बन जायेगी।

19) आप बच्चे जितना हर कामना से न्यारे रहेंगे उतना आपकी हर कामना सहज पूरी होती जायेगी। फैसल्टीज़ मांगो नहीं, दाता बनकर दो। कोई भी सेवा प्रति वा स्वयं प्रति सैलवेशन के आधार पर स्वयं की उन्नति वा सेवा की अल्पकाल की सफ़लता प्राप्त हो जायेगी लेकिन आज महान होंगे कल महानता की प्यासी आत्मा बन जायेंगे, सदा प्राप्ति की इच्छा में रहेंगे इसलिए इच्छा मात्रम् अविद्या बनो।

20) कभी भी इन्साफ माँगने वाले नहीं बनो। किसी भी प्रकार के माँगने वाला स्वयं को तृप्त आत्मा अनुभव नहीं करेगा। महादानी भिखारी से एक नया पैसा लेने की इच्छा नहीं रख सकते। यह बदले वा यह करे वा यह कुछ सहयोग दे, कदम आगे बढ़ावे, ऐसे संकल्प वा ऐसे सहयोग की भावना परवश, शक्तिहीन, भिखारी आत्मा से क्या रख सकते!

21) अगर कोई आपके सहयोगी भाई वा बहन परिवार की आत्मायें, बेसमझी वा बालहठ से अल्पकाल की वस्तु को सदाकाल की प्राप्ति समझ, अल्पकाल का मान-शान-नाम वा अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा रखती हैं तो दूसरे को मान देकर के स्वयं निर्मान बनना, यह देना ही सदा के लिए लेना है। किसी से कोई सैलवेशन लेकर के फिर सैलवेशन देने का संकल्प में भी न हो। इस अल्पकाल की इच्छा से बेगर बनो।

22) जब तक किसी में अंश-मात्र भी कोई रस दिखाई देता है, असार संसार का अनुभव नहीं होता है बुद्धि में यह नहीं आता कि यह सब मरे पड़े हैं तब तक उनसे कोई प्राप्ति की इच्छा हो सकती है, लेकिन सदा एक के रस में रहने वाले, एकरस स्थिति वाले बन जाते हैं। उन्हें मुर्दो से किसी प्रकार की प्राप्ति की कामना नहीं रह सकती। कोई विनाशी रस अपनी तरफ आकर्षित नहीं कर सकता।

23) अनेक प्रकार की कामनायें सामना करने में विघ्न डालती हैं। जब यह कामना रखते हो कि मेरा नाम हो, मैं ऐसा हूँ, मेरे से राय क्यों नहीं ली, मेरा मूल्य क्यों नहीं रखा.. तब सेवा में विघ्न पड़ते हैं। इसलिए मान की इच्छा को छोड़ स्वमान में टिक जाओ तो मान परछाई के समान आपके पिछाड़ी आयेगा।

24) कई बच्चे बहुत अच्छे पुरुषार्थी हैं लेकिन पुरुषार्थ करते-करते कहाँ-कहाँ पुरुषार्थ अच्छा करने के बाद प्रालब्ध यहाँ ही भोगने की इच्छा रखते हैं। यह भोगने की इच्छा जमा होने में कमी कर देती है इसलिए प्रालब्ध की इच्छा को खत्म कर सिर्फ अच्छा पुरुषार्थ करो। इच्छा के बजाए अच्छा शब्द याद रखो।

25) भक्तों को सर्व प्राप्ति कराने का आधार–'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्थिति है। जब स्वयं 'इच्छा मात्रम् अविद्या' हो जाते हो, तब ही अन्य आत्माओं की सर्व इच्छाएं पूर्ण कर सकते हो। कोई भी इच्छाएं अपने प्रति नहीं रखो लेकिन अन्य आत्माओं की इच्छाएं पूर्ण करने का सोचो तो स्वयं स्वत: ही सम्पन्न बन जायेंगे।

26) अब विश्व की आत्माओं की अनेक प्रकार की इच्छायें अर्थात् कामनायें पूर्ण करने का दृढ़ संकल्प धारण करो। औरों की इच्छायें पूर्ण करना अर्थात् स्वयं को इच्छा मात्रम् अविद्या बनाना। जैसे देना अर्थात् लेना है, ऐसे ही दूसरों की इच्छायें पूर्ण करना अर्थात् स्वयं को सम्पन्न बनाना है। सदा यही लक्ष्य रखो कि हमें सर्व की कामनायें पूर्ण करने वाली मूर्ति बनना है।

27) ऐसे सर्वन्श त्यागी बन सदा हर श्रेष्ठ कार्य में, सेवा की सफलता के कार्य में, ब्राह्मण आत्माओं की उन्नति के कार्य में, कमजोरी वा व्यर्थ वातावरण को बदलने के कार्य में ज़िम्मेवार आत्मा समझकर चलो। हद के कर्म का, हद के फल पाने की अल्पकाल की इच्छा से इच्छा मात्रम् अविद्या बनो। तो सदा प्रत्यक्ष फल खाने वाले सदा मनदुरुस्त होंगे। सदा स्वस्थ होंगे। सदा मनमनाभव होंगे।

28) राजा का अर्थ ही है दाता। अगर हद की इच्छा वा प्राप्ति की उत्पत्ति है तो वो राजा के बजाय मंगता (मांगने वाला) बन जाते हैं। आप दाता के बच्चे हो, सर्व खज़ानों से सम्पन्न श्रेष्ठ आत्मायें हो। सम्पन्न की निशानी है – अखण्ड महादानी। तो एक सेकण्ड भी दान देने के बिना रह नहीं सकते।

29) आधाकल्प से जो भक्ति की है, उसका फल ज्ञान सागर बाप और अविनाशी ज्ञान की प्राप्ति होती है, जिस ज्ञान से ज्ञानी तू आत्मा बन जाते हो। ज्ञान सागर और ज्ञान में समाये हुए हो इसलिए इच्छा मात्रम् अविद्या हो। कोई भी अप्राप्ति वा इच्छा आपके पास रह नहीं सकती।

30) जैसे गायन है - इच्छा मात्रम् अविद्या - तो यह फरिश्ता जीवन की विशेषता है। जब ब्राह्मण जीवन फरिश्ता जीवन बन जाती है तो कर्मातीत स्थिति को प्राप्त हो जाते हैं। वे किसी भी शुद्ध कर्म, व्यर्थ कर्म, विकर्म वा पिछले कर्मों के बन्धन में नहीं बंधते।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

गुल्जार दादी जी के अनमोल वचन

"क्षमा भाव के बिना शिक्षा रोब का रूप ले लेती है इसलिए शुभ भावना सम्पन्न संकल्प करो, स्वमान में रहो और सबको सम्मान दो" (11-11-08)

हम सभी बाबा के लवलीन बच्चे, सदा बाबा के लव में, प्यार में खोये हुए हैं। यह परमात्म प्यार कोटों में कोई को प्राप्त होता है क्योंकि हम डायरेक्ट बाबा की पहली रचना हैं। हमें सदा बाबा याद रहता है, बाबा के बिना तो संसार ही नहीं है। फिर है सूक्ष्म वतन और मूलवतन। उसका भी हम सबने अनुभव किया है, सिर्फ सुना व समझा नहीं है, अनुभवी मूर्त बन गये हैं। बाबा के लव में लीन होने से कितनी मीठी, प्यारी लाइफ का अनुभव होता है। बाबा हम बच्चों को कहते हैं तुम मेरे बच्चे बेफिक्र बादशाह हो क्योंकि हमारी जिम्मेवारी लेने वाला भगवान है। अगर हमने मन से अपने जीवन की जिम्मेवारी बाबा को दे दी, तो भगवान से बड़ा और कोई है क्या! लेकिन यह जरूर देखना है कि सचमुच हमने अपने जीवन की जिम्मेवारी बाबा को दी है! या कभी बाबा को दी है, कभी थोड़ी जो भी सांसारिक बातें होती हैं, उनमें भी बुद्धि जाती है। हमारे सामने माया ही पेपर लेने वाली है। जब बाबा को जिम्मेवारी दे दी, तो उसके आगे माया कुछ नहीं कर सकती। तो बाबा को जिम्मेवारी दी है या कभी-कभी मैं पन आ जाता है? मैं और मेरापन, यह दो बातें ही इस ईश्वरीय जीवन में, सम्पन्न बनने में विघ्न रूप बनती हैं। हद का मैंपन या मेरापन, यह बाबा से दूर कर देता है। जब आप कहते हो बाबा मेरे से कम्बाइन्ड है, तो कम्बाइन्ड अलग हो ही नहीं सकता। जिसके साथ सर्वशक्तिवान कम्बाइन्ड हो उसके आगे माया की हिम्मत ही कैसे होगी!

शुरू में बाबा कहता था बच्ची, इतना मास्टर सर्वशक्तिमान बनो जो माया दूर से ही भाग जाये। दूर से माया को भगाने के लिए कम्बाइन्ड की स्मृति में रहें। कई कहते हैं हम कम्बाइन्ड तो

हैं परन्तु समय पर उससे सहयोग नहीं लेते हैं। कोई को भी जब वार करना होता तो पहले वह अकेला करता है फिर वार करता है। हम कम्बाइन्ड से अलग होवें ही क्यों! अगर कम्बाइन्ड रूप में सदा रहें तो माया कुछ नहीं कर सकती। हम युद्ध करें फिर मायाजीत बनें, उसमें भी हम टाइम क्यों खराब करें। अगर किसी को बार-बार बीमारी आती है, तो भले हम दवाई से बीमारी खत्म करें लेकिन बार-बार बीमारी आने से कमजोरी तो आ ही जाती है।

बाबा की आशायें पूर्ण करने वाले कौन! हम बच्चे ही हैं। हम बाबा की आशाओं के दीपक हैं। बाबा की आश हम बच्चों के प्रति क्या है! बाबा कहते हैं मेरे समान बनो। ऐसे नहीं, मेरे समान थोड़ा-थोड़ा तो बनो। नहीं, मेरे समान पूरा बनो। आजकल तो बाबा ने विशेष कहा है कि मैं एक-एक बच्चे को राजा बच्चा बनाता हूँ। स्वराज्य अधिकारी बनाता हूँ। तो हम अपने आप से पूछें हम राजा बच्चे हैं? क्योंकि राजा माना, जिसमें कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर हो। पहले हम पूछें कि हमारा मन के ऊपर कन्ट्रोल है? क्योंकि मन जीते जगतजीत कहा जाता है, जो भी फीलिंग आती है, तो पहले मन में फील होता है। तो मन के राजा बने हैं? सदा ही मन के राजा बनकर रहें, लिंक जुटा रहे इसके लिए बाबा ने बहुत अच्छी ड्रिल सुनाई है।

बाबा की मुरली में ''सदा'' शब्द यूज़ होता है, कभी-कभी शब्द तो ब्राह्मण जीवन की डिक्सनरी में है ही नहीं। हम भी अपने से पूछें, हम जो भी कर्म करते हैं, जो बाबा कहते हैं सदा लिंक जुटी रहे, ऐसे नहीं टूटे फिर हम जोड़ें। दुबारा जोड़ने से फर्क तो पड़ता है ना। तो मन हमारा ऑर्डर में चलता है? बाबा मन, बुद्धि, संस्कार की कचहरी लगाता था क्योंकि कई बार सूक्ष्म संकल्प इतना चेक करने में तो सूक्ष्म चेकिंग चाहिए कि सारा दिन मन का मालिक बनके मन को चलाया? हम सबका लक्ष्य है कि सम्पूर्ण, बाप समान बनना ही है। तो यह चेकिंग जरूरी है कि मन-बुद्धि-संस्कार सब कन्ट्रोल में हों। हाथ-पांव तो स्थूल कर्म कर्ता निमित्त हैं। लेकिन कभी संस्कार टक्कर में आ जाते हैं, बुद्धि भी कभी हाँ के बजाय ना की तरफ चली जाती है। यह चेकिंग जितनी अपनी कर सकते हैं, दूसरा नहीं कर सकता है।

हम कहेंगे अभी हमने आधा घण्टा योग किया, तो आधा घण्टा योग किया या बीच-बीच में युद्ध किया? आधा घण्टा आप योग में थे या नहीं, यह आप ही जान सकते हो। तो सारा दिन हम यह चेकिंग करें। चेकिंग करेंगे तो चेन्ज होंगे। सिर्फ चेकिंग करेंगे तो दिलशिकस्त हो जायेंगे। बाबा चाहता है कि हम अपने स्वमान में रहें। साथ में हम संगठन में रहते हैं, गाँव-गाँव में हमारा घर है, इतने बड़े परिवार के हम हैं। देखो हम झाड़ के चित्र में बीज के साथ बैठे हैं। तो पूर्वज हो गये ना, पूज्य भी हैं, पूर्वज भी हैं। विश्व कल्याणकारी विश्व परिवर्तक हैं। जहान के नूर, बाबा की आँखों के तारे हैं। बाबा समय प्रति समय कितने स्वमान देते हैं। अमृतवेले हम बाबा से शक्ति लेकर अगर सारे दिन का स्वमान और टाइमटेबल सेट करें कि आज सारा दिन इस स्वमान के अनुभव में रहेंगे। अगर रोज़ एक स्वमान भी याद करें और सारा दिन उसी स्वमान में स्थित रहने का अभ्यास करें, तो बहुत मजा आयेगा। संगठन में रहने के लिए दूसरा शब्द है - सबको सम्मान दो। स्वमान में रहो और सम्मान दो।

संगठन में चलना और सफल होना उसके लिए सबको सम्मान दो क्योंकि संगठन में भिन्न-भिन्न संस्कार तो होंगे ही। सभी एक नम्बर तो नहीं होंगे। माला में 108 वाँ नम्बर भी तो है ना। बाबा ने सभी की खातिरी तो बराबर की। फिर भी 108 वाँ नम्बर क्यों बना! यह हरेक का पुरुषार्थ अपना-अपना है। कुछ भी हो संगठन में एक दो को सम्मान दो और सम्मान लो।

जैसे रास्ते में कोई गिर गया है तो आप क्या उस गिरे हुए व्यक्ति को लात मारेंगे या सहारा देकर उठायेंगे? मर्यादा तो यही है ना कि उसे सहारा दो, खड़ा करो। तो मानो ब्राह्मण परिवार में कोई संस्कार वश गिर गया है तो हमारा काम क्या है? उसको सहारा देना। सहारा क्या देंगे, शुभ भावना, शुभ कामना। भले वो नहीं देवे, मैं तो दूँ। संगठन में सम्मान देना है। साथ-साथ परिवार में सबके प्रति यही इच्छा रहती है कि यह सुधर जाए। इसको कोई ऐसी शिक्षा दें जो यह अपने को ठीक कर लेवे। लेकिन शिक्षा भी अगर क्षमा भाव के बिना होगी तो शिक्षा रोब का रूप ले लेती है। रोब भी क्रोध का ही अंश है। मम्मा हमेशा कहती थी कि मुझे बाबा ने काम दिया है कि आपको इन अलग-अलग डाल-डालियों को इकट्ठा करके एक चन्दन की डाली बनाना है। हम भी मास्टर प्यार के सागर हैं। तो मास्टर ज्ञान के सागर, प्रेम के सागर, हमारा स्वरूप होना चाहिए। तो शिक्षा भले दो लेकिन क्षमा का स्वरूप हो।

यह हमको चेक करना है कि हम स्वमान में रहते हैं? अपने मन का भी टाइम-टेबल बनाओ। किस स्वमान में रहना है, मन्सा से क्या सेवा करना है? कर्मणा क्या करना है, संगठन में स्नेह से कैसे चलना है। एक दो से कैसे गुण उठाना है। यह सारा मन का टाइमटेबल रोज़ सुबह अपना बनाना चाहिए। मन का टाइमटेबल बनाने से आपकी चेकिंग बहुत अच्छी हो जायेगी। मन का मालिक बनने के बिना कभी भी ऊंच पद नहीं पा सकते। जो स्व का मालिक नहीं बन सकता है, वो विश्व का मालिक कैसे बनेगा। पहले स्वराज्य फिर विश्व-राज्य। यह ज्ञान एक दर्पण है, इस दर्पण में अपना मुख आपेही देखो।

अचानक के खेल तो शुरू हो गये हैं ना, अति में जाना बाकी है। संसार के समाचार सुनो तो क्या हो रहा है! जो बाबा ने

कहा है वो होना शुरू हो गया है। हमारी स्पीड भी वही है या नहीं, अभी तो उड़ने का समय आ गया है। बाबा ने अभी चलने को कैंसिल कर दिया है। उड़ेंगे तब जब बेफिकर बादशाह होंगे। जो करना है सो अब करना है। चाहे तन से, चाहे मन से, चाहे धन से। अगर बेफिकर बादशाह बनकर रहना है तो कोई हद का संकल्प न हो। बाबा में पूरा फेथ हो। अरे हम अच्छे हैं, अच्छे रहेंगे और अच्छा होगा। इतना निश्चय पक्का होना चाहिए। हमारा साथी कौन है! अति भी हो जाये तो भी साक्षी होकर देखना है। हमारे साथ बाबा है। यह बाबा का निश्चय, हमें निश्चिन्त बनायेगा। ये कर लूँ, यह बचा लूं। यह आना माना संशय बुद्धि और संशय बुद्धि विजयन्ती हो नहीं सकता। हमारा बाबा से प्यार है, हम बाबा के प्यार में खोये हुए हैं। निश्चय बुद्धि कभी भी हार खा नहीं सकते, बाबा के गले का हार बनेंगे। तो निश्चय में रहो, कम्बाइन्ड रहो। कोई भी संकल्प नहीं करो। बाबा हमारे साथ है, हमारा बाल भी बांका नहीं हो सकता। तो सभी निश्चयबुद्धि विजयन्ती है ना! हम ही वियजी बनेंगे, इतना उमंग-उत्साह और खुशी होनी चाहिए। बाबा के निश्चय में सब हुआ ही पड़ा है, इतने निश्चिन्त। अच्छा।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

"बाबा के प्यार की शक्ति को धारण कर वातावरण को हल्का और शान्त बना दो" (28-08-06)

सबसे अच्छा कौन? मैं, बाबा या ड्रामा। कौन? बाबा ने ड्रामा की नॉलेज देकर अच्छा बना दिया तब कहते हैं बाबा बड़ा अच्छा है। ऐसी समझ दी है जो ड्रामा बड़ा अच्छा लगता है। हर सीन ड्रामा की देख, पार्ट बजाने वाला अच्छा वही होता है जो वैरायटी सीन देख सकता है। ड्रामा कल्याणकारी है, यह विश्वास हो चुका है। बाबा कल्याणकारी या ड्रामा कल्याणकारी है? मूंझते नहीं है पर जो क्वेश्चन उठते हैं तो बाबा ऑन्सर दे देता है। यह तो कहेंगे कि बाबा कल्याणकारी है, पर बाबा कहते हैं बच्चे हर ड्रामा में सीन तुम्हारे लिए कल्याणकारी है। संगमयुग है ना, कलयुग काला है, सतयुग सोने जैसे युग में जा रहे हैं। गोल्डन युग में इतने सुन्दर बन जाते हैं।

सारी दुनिया में कैसे लोग भी हैं, लेकिन शेर पर सवारी शक्ति की है। पाण्डव में भी शक्ति है, शक्तियों में भी शक्ति है। बाप से डायरेक्ट शक्ति हरेक ने ली है। शक्ति हर आत्मा को परमात्मा से पर्सनल खींचनी है। कोई किसी को नहीं दे सकता है, हाँ सहयोग दे सकते हैं। शक्ति प्रार्थना करने से भी नहीं मिलती है, मांगने से भी नहीं मिलती है। हुकुम चलाने से भी नहीं मिलती है। बाबा आप यह कर लो ना, हमारा काम जल्दी से करवा दो ना! ऐसे शक्ति नहीं मिलती है। बाबा के हुकुम पर चलने से शक्ति मिलती है। बाबा कहता, मैं जो कहता हूँ तुम कर लो, मेरे को नहीं बोलो, मेरा कर दो। मेरे को कहेंगे तो मैं नहीं करूँगा। मैं जो बोलता हूँ, पहले वो कर लो फिर सब करूँगा, हजार गुणा करूंगा। परन्तु भगवान से, सच्ची दिल से उसको अपना बनाकर, निश्चिन्त रहकर, निश्चय के बल से अपने को जान, मेरे को पहचान, मेरा बाप कौन? जब तक अपने को नहीं जाना है, तो बाप को भी नहीं जान सकते। यह सिर्फ कॉपी पर नोट नहीं करो, दिमाग में नोट करो। अपने को अच्छी तरह से जान मैं शरीर नहीं, आत्मा हूँ। शरीर के नाम का भी महत्व है, मुझे किसी ने कहा कि तुम मेरे जान की की (Key) हो। अपनी जान बचानी हो तो चाबी रखो अपने हाथ में। जिसको चाभी सम्भालना नहीं आता, उसकी लाइफ क्या होगी? उसके पास खजाना भरपूर है लेकिन चाभी नहीं है तो न खुद यूज़ कर सकता है, ना किसी को दान कर सकता है। तो बाबा ने कोई लॉकर में रखने के लिए खजाना नहीं दिया है। यहाँ तो लॉकर भी लूटने वाले हैं। बाबा खजाना देता है, अभी यूज़ करो और दान करो। यूज़ करो तो पर्सनैलिटी लगे कि हाँ इसके पास खजाना है। मस्तक से पता चलता है।

हमारा दिमाग इतना ठीक हो जो सेकेण्ड में बात कैच कर सके। हमारी शक्ल शिकन वाली न हो। बाबा की समझ से अभी दिमाग ठीक काम करता है, करके पश्चाताप नहीं करता है, समय व्यर्थ नहीं गंवाता है। हर बात में हर हालत में निर्णय करने की, परखने की शक्ति जिसकी तेज नहीं है वो समय गंवाता है, भाग्य गंवाता है। हाथों में भाग्य सामने है, सब कुछ है, पर उससे कैसे पदमापदम भाग्य बनें, उसमें बुद्धि काम नहीं करती है।

बुद्धि स्वच्छ सोने जैसी चाहिए। सतोगुणी बुद्धि अच्छी चीज़ को अपनी तरफ खींच लेगी। उसमें हिम्मत बच्चे की, मदद बाप की। बाबा बड़ा जवाहरी है, बाबा देखता है कि यह हिम्मतवान

बच्चा है, यह विजयी तो क्या, नूरे रत्न बनने वाली आत्मा है। इसको वैल्यू है अपने बाबा के ज्ञान रत्नों की, तो हजार गुणा वरदान दे देता है। फिर तन में, धन में, सम्बन्ध में, सबमें मदद मिलती है। हमारा बाबा रत्नागर, जादूगर सौदागर है, उससे सौदा किया है। वह दाता, भाग्यविधाता है।

ऐसे बाप को अगर न समझा तो कुछ नहीं समझा। बाबा को नहीं समझा माना अभिमान अन्दर बैठा है। कहाँ न कहाँ छिपकर अभिमान हमको यूज़ करता है, हम अभिमान के बिगर चल नहीं सकते हैं। जैसे बाबा ने देह का लोन लिया है, पर हमने तो दे दिया है। तन मन सब ईश्वर अर्थ है। बच्चे लोन पर गोद थोड़ेही लेते हैं। अपना समझकर गोद लेते हैं। हम अधिकारी हैं तो क्या हमारे तन को बाबा सम्भालेगा नहीं!

मेरे को किसी ने पूछा था कि क्या एक मिनट में सब शान्त हो जायेंगे? तो एक मिनट का कितना फायदा है। एक मिनट में 60 सेकेण्ड होते हैं। हरेक देखे कि कम से कम बाबा की साठ बातें हमारे पास हैं। कोई भी बात एक सेकेण्ड में अपसेट तो नहीं कर देती है। साइलेन्स पावर क्या होती है जो अन्दर से यह जानता है, वो अशान्त नहीं हो सकता। बाबा ने ऐसा ज्ञान घोट के पिलाया है जो एक मिनट भी हम अशान्त नहीं हो सकते हैं। जो जितना बड़ा होता है, उसके पास अशान्ति का कारण भी उतना बड़ा होता है। हमें निमित्त बाबा ने बनाया है तो कोई कारण से भी मुझे अशान्ति हुई तो एम्बूलेन्स बुलाना पड़ेगा।

जस्ट ए मिनट क्या है! अपने मन की अशान्ति हम सबको खत्म करना है ताकि दुनिया से अशान्ति खत्म हो जाये। प्रैक्टिकली अशान्ति का कोई कारण है नहीं, भारी होने का कारण कोई है नहीं। अशान्ति भारी बनाती है, शान्ति हल्का बना देती है। कोई निर्णय करना है हाँ, भले। बहुत विचार की जरूरत नहीं है। बहुत विचारों से वातावरण भारी हो जाता है। मैंने आपका विचार नहीं माना या आपने मेरी नहीं मानी तो स्नेह चला गया। स्नेह चला गया तो रूखा बन गया, शान्ति का वातावरण चला गया। शान्ति के लिए चाहिए प्रेम, प्रेम में चाहिए शक्ति। अगर कोई अपने आपको बाबा के प्यार से, पवित्रता के बल से नहीं चलाता है तो शक्ति नहीं आ सकती है। फिर कोई मच्छर भी काटेगा तो मुंह फूल जायेगा। क्यों, बाबा के लाडले, सिकीलधे बच्चे हैं। दुनिया वालों को इतना फील नहीं होता है, हमको यहाँ ज्यादा फील होता है। क्यों? बाबा हमारे में नेचुरल शक्ति भर रहा है। देवता पीछे बनेंगे, ब्राह्मण जीवन में ईश्वरीय गुण भर रहे हैं। अगर गुणों को धारण करने पर ध्यान नहीं है तो बाबा के प्यार की शक्ति यूज़ नहीं कर रहे हैं। अगर प्यार की शक्ति यूज़ करें तो वातावरण को हल्का और शान्त बनाना सहज है। जो मेरे योग्य नहीं है, वह संकल्प में भी नहीं आ सकता। याद रहे कि मैं आत्मा परमात्मा का बच्चा हूँ, तो वातावरण शान्त रहेगा। यह रिहर्सल नहीं करते हैं तो नम्बरवन क्वालिटी नहीं बनते हैं। शान्ति के सागर में डुबकी लगायें तो चेहरा चमकता हुआ दिखाई देगा। शान्ति में प्रेम, प्रेम में शक्ति, शक्ति में खुशी, इससे फिर आनन्द स्वरूप स्थिति बन जाती है। इसी भावना से मैंने कहा दिल बड़ी रखो। सेवा हुई पड़ी है, अपना पुरुषार्थ करो, सफलता हुई पड़ी है, फिकर मत करो। हरेक पहले से बेफिकर रहने, राज्य-अधिकारी बनने का अभी भाग्य ले लो। ऐसी स्थिति बनाना माना बाबा का नाम बाला करने के निमित्त बनना। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी की अनमोल शिक्षायें

"अलौकिक जन्मपत्री में हमारी रेखायें वा दशा"

(1999)

1) त्रिकालदर्शी बाबा जो हमारी सारे कल्प की जन्मपत्री को जानता है। उस भ्रगुऋषि बाप ने हमारे सारे कल्प की जन्मपत्री को जानते हुए भी हिसाब पूछा है कि हरेक बताये मेरी जन्मपत्री क्या है? बाबा हमारी वर्तमान जन्मपत्री का हिसाब पूछता है, जिसके आधार से पता चलता कि हमारा वर्तमान और संगम का भविष्य अर्थात् अन्तिम स्टेज और भविष्य में अगला जन्म क्या होगा? वर्तमान के आधार पर अन्तिम है और अन्तिम के आधार पर ही भविष्य है।

2) हमारा पहला एक सवाल उठा कि भ्रगुऋषि इस ज्ञानी योगी बच्चों की जन्मपत्री जानना चाहता है, वह ज्योतिषि जन्मपत्री देखते, वह कर्मों का हिसाब-किताब बताने वाली होती, लेकिन हमारी जन्मपत्री कर्मों के खाते को समाप्त करने की है तो हम अपनी जन्मपत्री द्वारा देख सकते हैं कि हमारा हिसाब-कितना कहाँ तक चुक्तू होता जा रहा है? यही जन्मपत्री धर्मराज के आगे पेश होनी है। तो हर एक अपनी जन्मपत्री में देखे कि हमारे भाग्य की रेखायें कैसी हैं? हमारी दशा एकरस रहती है? ऐसे तो नहीं आज ऊंची कल नीची हो जाती? जैसे सीढ़ी के चित्र में दिखाया

है कि हम संगम से सीधा ऊपर जाते हैं, ऐसे ही हमारी दशा इधर-उधर तो नहीं होती। कोई भी कारण से मेरी दशा बदलती तो नहीं है?

3) बाबा ने हम सबको अपनी रेखाओं को सीधा बनाने व दशा को एकरस रखने का साधन दिया है योग। हम कर्मयोगी हैं, हम राज्य स्थापन करने वाले योगी हैं। हम ज्ञान सहित योगी हैं, हम पवित्र योगी हैं लोग तो अपने कर्मों को पवित्र बनाने की मेहनत करते लेकिन बाबा ने हमें पहले ही भाई-भाई की दृष्टि पक्की कराई, हमारी बुद्धि में सदा बाबा है, हम लगन में मगन रहने वाले पवित्र योगी हैं क्योंकि हमारे सामने बापदादा है, हम शीतल योगी हैं।

4) हम योगी बनते नहीं हैं लेकिन जिस घड़ी बाबा के पास आये उस समय से योगी हैं। योग का अर्थ है दुनिया की हर चीज़ से बेहद के वैरागी। जब हमारी स्टेज योगी की है तो मेरे योग को माया तोड़ नहीं सकती। यह ईश्वरीय नशा है। यह विल पावर है जिससे दृढ़ता आती है। आज बाबा ने कहा तुम सब युद्ध के मैदान में खड़े हो, तुम्हें मायाजीत, जगतजीत बनना है, उन योद्धों को तो खिला-पिलाकर ऐसा आराम से रखते हैं, सिर्फ उन्हें इतना ही आर्डर होता है कि तुम्हें बार्डर की रक्षा करनी है लेकिन हमें बाबा ने योद्धे तो कहा, साथ में कहा तुम योद्धों को वैरागी और त्यागी होकर रहना है। हम बाबा का सहारा लेकर अपने लिए ही मायाजीत बनते हैं, हमें पहले से ही मालूम है कि हम विजयी हैं।

5) अब सवाल उठता है कि हम योद्धे हैं या योगी? हम तो सहज सरल योगी हैं? योद्धे कहना भारी बात हो जाती, हम सहजयोगी हैं। सहजयोगी समझने से सब मुश्किलातें खत्म हो जाती हैं, भारीपन समाप्त हो जाता है। योगी समझने से एक की लगन में रहते, क्योंकि नशा रहता कि हम विश्व पर राज्य स्थापन करने वाले, विश्व को परिवर्तन करने वाले योगी हैं। योगियों को एक ही अतीन्द्रिय सुख में मगन रहने का सुख है। ऐसे अपने से बातें करो तो कोई मेहनत, मुश्किल नहीं दिखाई देगी। योग की मस्ती में रहने से कितना भी व्यस्त होंगे लेकिन व्यस्त नहीं लगेंगे। पेपर हमारे सब पास हो गये हैं, पेपर देने हैं यह नहीं लगता। पेपर तो हो चुके अभी तो हम विश्व सेवा पर निमित्त बैठे हैं। सरल योगी समझने से कोई भी मुश्किलात सरल हो जाती है। हमारे 63 जन्मों के खाते खत्म हुए ही पड़े हैं, बाकी नाम-मात्र के कुछ हैं जो पूरे हो जायेंगे।

6) योगी लाइफ बड़ी शीतल, बड़ी सरल रहती, कोई भारीपन नहीं। एक बाबा साथ है तो सब सरल हो जाता है। जो नॉलेज बाबा ने हमें दे दी उसके अन्दर सब कुछ समाया हुआ है, हमें सारी नॉलेज है, हमारी नॉलेज में साइन्सदानों की साइन्स भी समाई हुई है। हमें यह संकल्प आ नहीं सकता कि हमें यह नॉलेज नहीं है।

7) हम बच्चों की बुद्धि में बाबा की एक बात घड़ी-घड़ी याद आती है कि बाबा ने कहा है बच्चे घर चलना है। कार्य व्यवहार करते भी घर चलने का अटेन्शन हो। हम सबके आगे एक सैम्पल हैं। हमारा चलना, हमारा बोलना, हमारे हर कर्म की सब कॉपी करते हैं। इसलिए इतना अटेन्शन रखना है।

8) हमारा बाबा है जादूगर... हमें उस जादूगर की जादूगरी पर फिदा हो जाना है। सचमुच उसने हमें अपना जादू लगा दिया... मैं कहती शल ऐसा जादू तो सबको लगे इससे कोई जुदा न रह जाए। यह जादू एक-एक पर लगे तो अहो भाग्य। भगवान का जादू लगे इनसे बड़ी दुनिया में कोई चीज़ नहीं। आप सब अपने पास एक तराजू रखो - उस तराजू में एक तरफ रखो बाबा, दूसरे तरफ अपने जन्मों का, कर्मो का बन्धन... हरेक के अनेक जन्मों के अनेक हिसाब-किताब हैं, अपने कर्मों को नहीं कूटो लेकिन एक तरफ रखो कर्म, एक तरफ बाबा फिर वर्णन करो भारी कौन? कर्म! कर्म बड़े या कर्म के खाते को भस्म करने वाला बड़ा! कर्मों से बचाने वाले ने हमारी जवाबदारी स्वयं के हाथ में ले ली। उसने कहा तू मेरी अंगुली पकड़ो मैं तुम्हारे सब पाप दग्ध कर दूँगा, यह जिम्मेवारी उसने ली। जब जिम्मेवार ने हमारी जिम्मेवारी ली तो हमारा दिल दिमाग, यह अंग सब शीतल हो गये। भगवान हम बच्चों से वायदा करता - वह अपना वायदा निभा रहा है फिर हम अपनी फुल जवाबदारी उसके हाथ में देकर हल्के क्यों नहीं होते! हल्के बनो तो फरिश्ते बनो।

9) रोज़ सवेरे एक ही धुन लगाओ - मुझे मेरा बाबा मिल गया। यह शिवबाबा की भांग पी लो, घोट-घोट कर नशा चढ़ा दो, बस इसी मस्ती में रहो तो बाकी दुनिया की सब मस्तियां खत्म हो जाएं। मुझे तो कई बार हंसी भी आती तो तरस भी पड़ता - कहते हैं मैं सच कहती हूँ मुझे इतना निश्चय नहीं बैठता। मुझे वह भगवान, वह ईश्वर मिल गया है, यह अन्दर से नहीं आता, मुझे तरस पड़ता, कहती हूँ बाबा आप कितने न प्यारे हो, लेकिन कितने गुप्त हो। बाबा इनके सामने तू बादल रख क्यों बैठे हो, जो बादलों के बीच आप सूर्य को यह नहीं जान सकते। बाबा को कहती - बाबा इनके सामने से यह बादल हटा दो तो यह देख लें, तू है कौन। तेरी इतनी शक्तियों की किरणें क्यों नहीं यह देखते! क्या इन्हें यह दिव्य बुद्धि नहीं मिली है। वास्तव में यह है सूक्ष्म में अपने देह-अभिमान का नशा, इसलिए सूर्य की शक्ति को पहचान नहीं सकते। अच्छा। ओम् शान्ति।